

आशा सरकाथि

1871

I

ASHA ARCHIVES

॥ देवि ॥

९

श्रीगनेसाय नमो नमः ॥ श्रीदेवै नमः ॥ पीतो पहार संतु स्ता पीतगंधा
नुलेपिता ॥ उदु स्तर तरावस्था पुया गच्छे त्र वासिनी ॥ पुर्वपीथस्थिता
निर्भ्यं वृं सशक्ति नमो स्तुते ॥ १ ॥ मा हे स्वरी महादेवी मोह माया निलंज ॥ राम ॥
नी ॥ महा वृषभ मा रुद्रा महा कुङ्कु र नादिनी ॥ हे अ व क्र नि नै दे हं कः ९
पाली ससि से खरि ॥ त्रिलोचन त्रिसु लं च ॥ सुक्ष सुत्र कमण्डल ॥ हा दाल

कार सर्वाङ्गी दक्षिणे नवर पुदा ॥ सु स्थिति विना शानी सर्व व्या
पि सुरे स्वरि ॥ स्वेत पुष्प रती देवी स्वेताङ्गी स्वेत वास सा ॥ स्वेत वस्त्र
परिधानी सुक्ता नर न धारिनी ॥ वाराणसी महा क्षत्रे तार वृक्षाः
निवासिनी ॥ अत्रे या च स्थिता पीथे ॥ मा हे स्वरि नमो स्तुते ॥ २ ॥
॥ ॥ वालभावे महा रौद्रा कौमारि रक्त लो चणी ॥ रक्त वस्त्र परिधा

॥देवी॥
२

नसिदुबारा रूपा विग्रहात् ॥ चतुर्भुजा सक्ति सुत्रं सिद्धिपात्र
वरं सुको ॥ मासारवरम सक्ति मयुरवरवाहिनी ॥ कोलापु
ज्यामहाक्षेत्रे वतवृक्षानि वासिनी ॥ याम्यपीथे स्थितानित्यं को
मारिचतमस्तुते ॥ ३ ॥ वैष्णवी वित्तुमाया च दैत्य दुर्गान्त
नासिनी ॥ हरीतस्मात्सवर्णाङ्गी गरुडोपरि संस्थिता ॥ सर्वत्र

॥राम॥

२

कृगदाहस्ता चतुर्बाहु विभुविता ॥ रत्नज्वाला महाकीर्त्या नाना
रत्नविभुविता ॥ हरिपुष्पं च गंधं च सदा हरीतधारिनि ॥ स्वर्ग
मत्यचपाताले स्थिती रूपेण संस्थिता ॥ अदृष्टा समहाक्षेत्रे क
उम्बवृक्षवासिनी ॥ त्रिस्वन्निःपिथे नैरित्यं नारायणी नमोस्तुते
॥ ४ ॥ वाराहोद्यो रक्ताङ्गी रक्तकेशि मसोदरी ॥ दंष्ट्रा कलालगम्भी

देवि

३

रा. वालार्क तेजलोचनी ॥ कपालमालिकामाला विचित्रपुष्पसोमिता ॥
महामहिषमारुहा ज्वलिताग्नि समपुजा ॥ मीनाकुशकनिकाया
हायाभरणनुषिता ॥ त्रिनेत्रज्वलितं देहं दुष्टदृष्टि विनासिनी ॥ जय
निदेव त्रसंस्थाना निम्बवृक्षसमासृता ॥ नागपीथे स्थिता नित्यं को
लरूपिनमोस्तुते ॥ ५ ॥ सक्रेस्वरिसहस्राक्षी कून्कुमरुणविग्रहा

राम

३

सुरेस्वरिसविदेवी सर्वालंकालभूषिता ॥ चतुर्भुजा विशालाक्षी
द्वत्रिंशद्विधारिणी ॥ महावज्रधरिदे स्थितिरेलावता गजा
॥ नानापुष्परतां देवि नानारत्नविनुषिता ॥ नानागन्धविरिप्राङ्गि
नानावस्त्रविराजिते ॥ चरित्रे च महाक्षेत्रे कउम्बवृक्षवासिनि ॥
वायूपीठे स्थिता नित्यं सक्रेस्वरिनमोस्तुते ॥ ६ ॥ चामूण्डा चण्डिका

देवि
४

चण्डि चण्ड चण्डा स्वरिनी ॥ चण्डा दहा सचण्डा क्षी पु चण्ड चण्ड वा
हिनी ॥ दुष्टा कलालरक्ता क्षी कपी लके सी कषोदरी ॥ कषा क्षी नी यनी ॥
रौद्रा जिह्वाललन भिषनि ॥ महापुता सन्य रूपा भूजा श्रष्टा स्त्र सो भ
नि ॥ अक्षि चर्म युता हस्ता दमरु षड्ध्वारिनि ॥ कर्त्रिक पाल हस्ता क्षी राम
वरदा भय भुषनि ॥ नर चर्म चृता देवी द्विपि चर्म कविस्थिता ॥ मुण्डना ४

ला धरी रौद्रा श्रुता भरण भुषिता ॥ हादालं काल सर्वाङ्गि न्यलिप्त
सदा प्रिये ॥ सहस्र सूर्य संकासी रोम कुपे प्रतियुति ॥ ज्वाला माला कु
ला देहा ते दुर्कोटि समुपमा ॥ भुत वेताल या किं न्या परिवारं चरा
क्षसी ॥ एकाग्र के महाक्षेत्रे न्य स्वस्थ वृक्ष वासिनी ॥ पिठ उत्तर सं
स्था य चा मुण्डाय नमो स्तुते ७ महा लक्ष्मि महा देवी सौ नमस्तु

देवी
५

रसुन्दरि॥ वैदुज्यपादुकारुहासिंहासनोपरिस्थिता॥ नतुर्नुजावि
साराक्षीखड्गफेत्तकधारिणी॥ नौपुरसारकेपुण्ड्ररत्नकुण्डलधारि
नि॥ रत्नोखचितसर्वाङ्गीचौदामनिविभूषणी॥ विचित्रपुष्परत्नञ्च
सस्रगन्धानुलेपिनि॥ त्रैलोक्यव्यापिनिदेवी सर्वस्थासचराचरं॥
सिद्धिगन्धर्वनमिताविद्याधरिसुधाञ्जिता॥ देवीकोतहापूज्यं स

रामः॥
५

आर्यभट्ट
ASMA ARCHIVES

1871

I